कहना क्या

जो कहना है वह कह दे फिर कहना क्या, जो होना है वो हो जाए फिर कहना क्या, जब सारी शिकायतें मिट जाए तो कहना क्या, हमारी शिकायतें शिकायतें नहीं है, एक बहाना है की कोई हमें बुलाए, इस बहाने कोई हम पर ध्यान दे, इस बहाने हम नज़र में आ जाए, क्योंकि जो है वो दिखना चाहिए, पर जब आप अपने आपको ख़ुद देख ले, तो फिर कहना क्या,,,नदी समंदर से मिल जाए फिर कहना क्या,,,नदी बहती है कल,,कल,,आवाज़ करती है पर जब समंदर से मिलन हो जाता है तो सारी आवाज़ें,,,सारी गूँज समा जाती है,,, ऐसा लगता है जैसे नदी शब्दों से मुक्त हो गई, शब्द सारे गिर गए और नदी चुप हो गयी,,पर हक़ीक़त में बात यह है की नदी ध्यान रूप हो गई, नदी समाधि रूप हो गई, जो कल, कल, करके आवाज़ कर रही थी,,,जो कहना चाहती थी की में भी समंदर हु,,, वह कहना छूट गया जब नदी समाधि रूप हप गई,,, हम समंदर में नदी को ढूँढने जाएँगे तो नहीं मिलेगी,,, नदी का कल कल आवाज़ जो कहता था और अपनी और ध्यान खिंचता था की में भी समंदर हु,,, पर हमने कभी ग़ौर किया नहीं था,,,हम सिर्फ़ उसे शिकायत समजते थे,,, वो एक संकेत था,,, की नदी समंदर से अलग नहीं है, पर हम चीज़ों को अलग अलग देखते है,,, हमें दो दिखाय देता है, पर यह भी एक संकेत है की दो को देखने वाला एक है, यह संकेत को अगर हम पकड ले तो समंदर की और यात्रा चालू हो सकती है, जहाँ पहोचकर कोई शिकायत नहीं,, कोई हम पर ध्यान दे या ना दे, क्योंकि ध्यान समाधि में बदल गया,,,दो एक हो गया,,नदी समंदर हो गई,,फिर हमारा कल कल किया हुवा संकेत के रूप में गूँजता रहेगा, जो दूसरों को अमृत के महासागर में मिल जाने के लिए निम्मित रूप हो जाएगा.

Aasthit